

वर्ष - 18

अगस्त, 2022

अंक - 191

Regd. Postal No. Dehradun-328/2022-24
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

अनमोल वचन	02	आपने कहा था	16
देववाणी	03	देव जीवन की झलक	19
कब तक सीखूँ?	04	मंज़िलें और भी हैं	21
उच्च बोध	06	भाव प्रकाश	22
छोटी बातें बड़े अर्थ	08	श्रद्धा सुमन	27
प्रतिज्ञाओं का अर्थ	13	ग्रीष्मकालीन आत्मबल विकास शिविर	30

जीवन व्रत

‘सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।’

- देवात्मा

सम्पादक

नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल

अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : सुशान्त सुनील

For Motivational Talks & Lectures & Sabhas :
Visit our YouTube channel : Shubhho Roorkee
www.shubhho.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता ₹ 100, सात वर्षीय ₹ 500, पन्द्रह वर्षीय ₹ 1000

मूल्य (प्रति अंक): ₹ 9

सम्पर्क सूत्र :

पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु

दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)

समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)

e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

अनमोल वचन

- ◆ बहुत से लोग स्वप्न देखने के लिए सो जाते हैं और बहुत से लोग अपने स्वप्न साकार करने के लिए जग जाते हैं, जाग कर स्वप्नों को साकार करें।
- ◆ सावधान! वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु का सामना हमें अकेले ही करना पड़ेगा, यदि हम पहले से मानसिक तैयारी करें, तो दुःख कम होगा।
- ◆ सत्य बोलने से सुनना कठिन है, स्वीकार करना उससे भी कठिन है, परन्तु जो सत्य को स्वीकार करता है, वह पर्वत जैसा महान् हो जाता है।
- ◆ अपने स्वप्नों को साकार करने के लिए अपने विचारों को बदलें और सोचें, मैं इससे भी अधिक अच्छा कर सकता हूँ।

फ़र्क़ किससे पड़ता है?

इस दुनिया में लाखों जन बहुत से क्षेत्रों में नम्बर वन बनने के लिये प्रयासरत हैं। पता नहीं क्यों, वे भूल जाते हैं कि हम किसी से बेहतर करें - इससे किसी को क्या फ़र्क़ पड़ता है?

लेकिन सत्य यह है कि यदि हम किसी के लिये कुछ बेहतर करें तो निस्सन्देह बहुत फ़र्क़ पड़ता है।

विचारणीय सत्य

कई बार यातायात के नियमों का उल्लंघन हमें भारी पड़ जाता है, जब हम जल्दबाज़ी में लाल बत्ती के सिग्नल को लाँघ जाते हैं, जबकि सिग्नल हमें पूरा मौका देते हैं - रुको, देखो और फिर चलो।

ऐसे ही जीवन की ज़्यादातर गलतियाँ जल्दबाज़ी में लिए गये निर्णय के कारण होती हैं। इसलिए क्या ही अच्छा हो - हम पहले सोचें, विचार करें और फिर उस पर काम करें। धन्य हैं वे, जो ऐसा कर पाते हैं और पछतावे की अग्नि में जलने से बचे रहते हैं।

जो किसी दूसरे प्राणी के प्रति पापाचरण का विचार करता है वह पाप पलट कर उसे ही सताता है।



देववाणी



बी.ए. पास अकड़ रखने वाला कहता है कि उसे माँ-बाप के उपकार कुछ नज़र नहीं आते। कुछ जन तो इससे भी आगे जाते हैं और कहते हैं कि माता-पिता ने अगर पाला है, तो अपनी गरज़ के लिये पाला है। देवात्मा के सम्बन्ध में भी एक-एक जन यह कह सकता है कि उन्होंने प्रत्येक पाप दूर किए हैं, तो अपनी गरज़ के लिए। मनुष्य को यह नज़र नहीं आता कि विकास के सिलसिले में बहुत-सी शक्तियाँ आई हैं, जो हमारे लिए सहायकारी बनती हैं। हमें उनका उपकृत बोध करना चाहिए।

- देवात्मा

सम्मान से जीना हम में से कौन नहीं चाहता? परन्तु सम्मान पाने के नियम को कोई-कोई जानता व पूरा करता है।

सम्मान पाने का सबसे बढ़िया तरीका है कि हम सचमुच वो बनकर दिखायें, जो हम होने का दावा करते हैं।



गुद्गुदी



बैंक में लोन सैंक्शन हो गया था, बैंक मैनेजर ने चेक देने के लिए हाथ बढ़ाया। ग्राहक ने कृतज्ञतापूर्वक कहा - “आपका यह ऋण मैं ज़िन्दगी-भर नहीं चुका सकूँगा।”

फिर बैंक मैनेजर ने हाथ पीछे खींच लिया और चेक अपने दर्राज में रख लिया।

सीख - ज्यादा मुंशी प्रेमचंद बनने की कोशिश न करें, कई बार हिंदी बोलनी महंगी भी पड़ जाती है।

किसी के भी अस्तित्व की किसी प्रकार की हानि करना पाप है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह जन्म से ही परिवार व समाज से भाषा, संस्कार, बोलना-चालना और व्यवहार करना बहुत कुछ सीखता है। वह जो कुछ भी करता है, कहता है, जानता है - सब कुछ सीखा ही तो है। लेकिन एक दिन मन में सहज प्रश्न उठा - कब तक सीखूँ?

उत्तर भी मिला - जब तक जीवन है, तब तक सीखो। सीखना बन्द कर देना ही बुढ़ापा है, विकास का रुक जाना है या यूँ समझो कि मौत की दस्तक है।

वस्तुतः सीखने की चाहत हो, तो कोई भी उम्र बड़ी नहीं है। पिछले दिनों हमारे संस्थान में 'जीवन विज्ञान' नामक एक आध्यात्मिक वर्कशॉप का आयोजन होने वाला था। मैंने एक बुद्धिजीवी अंधेड़ उम्र की महिला को इससे लाभान्वित होने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने अन्यत्र अपनी व्यस्तता के चलते उस दिन शामिल होने में असमर्थता दिखाई और कहा - मैं माँ को भेज सकती हूँ। मैंने सहमति व्यक्त करते हुए कहा - ठीक है, इस बार उन्हें भेज दो।

तदनुसार उपर्युक्त वर्कशॉप में उस महिला की माँ ने ज्वाइन किया। उनकी उम्र 70 वर्ष से कुछ अधिक रही होगी, किन्तु उन्होंने सक्रिय भागीदारी निभाई। कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करके वह अपने घर लौटीं।

उसी दिन रात्रि में उस महिला का संदेश मिला - मेरी माँ जब से वर्कशॉप में शामिल होकर लौटी हैं, वहीं की बात कर रही हैं और पूछ रही हैं - 'जीवन विज्ञान' का अगला सत्र कब होगा? अपनी माँ की सीखने की ललक व उत्साह को देखते हुए अपने सन्देश की समापन टिप्पणी (concluding Remark) में वह लिखती हैं कि मैंने महसूस किया -

No one is that old at any time to learn something new in life.

यानि जीवन में कभी कोई इतना बूढ़ा नहीं होता कि वह कुछ नया न सीख सके।

इस सन्देश को पढ़कर मुझे वह घटना याद आ गई, जब एक समुद्री जहाज द्वारा एक लम्बी यात्रा पर जा रहे बुजुर्ग को लिखते-पढ़ते देख एक सह यात्री ने पूछा - बाबा क्या कर रहे हो? बुजुर्ग ने कहा - चाइनीज़ भाषा सीख रहा हूँ।

सहयात्री ने कहा - इतनी कठिन भाषा वह भी इस उम्र में! आपकी वैसे आयु कितनी है? बुजुर्ग ने कहा - उम्र 90 वर्ष है। लेकिन यंगमेन, मैं अभी मरा नहीं। और जब तक ज़िन्दा हूँ मैं सीखूँगा।

निर्मल मन से जितना भी पुण्य करोगे वह कम नहीं है, बहुत अधिक है।

वाह, क्या स्परिट है, जोश है!

निस्सन्देह, सीखने की कोई उम्र नहीं होती। विकास कभी भी किया जा सकता है। अतः कब तक सीखूँ - तब तक सीखूँ, जब तक श्वास है, ऐसी सोच के साथ हम सब जी सकें, ऐसी है शुभकामना!

- डॉ० नवनीत अरोड़ा

संकल्प

एक बार नानक काशी के पास एक गाँव में प्रवचन कर रहे थे। प्रवचन के बीच में उन्होंने कहा, 'सफलता के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आशावादी होना चाहिए।' प्रवचन खत्म होने के बाद एक भक्त ने पूछा, 'गुरु जी, क्या किसी चीज़ की आशा करना ही सफलता की कुंजी है।' नानक ने कहा, 'नहीं, केवल आशा करने से कुछ नहीं मिलता। मगर आशा रखने वाला मनुष्य ही कर्मशील होता है।' लेकिन उस आदमी की समझ में ये बातें नहीं आ रही थीं। उसने कहा, 'गुरु जी, आप की गूढ़ बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं।' उस समय खेतों में गेहूँ की कटाई हो रही थी। तेज गर्मी पड़ रही थी। नानक ने कहा, 'चलो मेरे साथ। तुम्हारे प्रश्न का जवाब वहीं दूँगा।' नानक उस आदमी को अपने साथ लेकर खेतों की तरफ चले गए।

उन्होंने देखा कि एक खेत में दो भाई गेहूँ की कटाई कर रहे थे। बड़ा भाई तेजी से कटाई करता हुआ आगे था, दूसरा भाई पीछे था। नानक उस आदमी के साथ वहीं एक आम के पेड़ के नीचे बैठ गए। दोपहर हो गई थी। छोटा भाई बोला, 'भइया, आज तो पूरी कटाई हो नहीं पाएगी। अभी बहुत बाकी है, कल सुबह आकर काट लेंगे।' बड़े भाई ने कहा, 'अब ज्यादा कहाँ बचा है। देखता नहीं, थोड़ा ही तो रह गया है। इन दो कतारों को काट लेंगे, तो बाकी बारह कतारें रह जाएगी। इतना तो आराम से काट लेंगे। कल पर क्यों टालता है।' बड़े भाई की बात सुनकर छोटा भाई जोश में आ गया और उसका हाथ भी तेजी से चलने लगा। थोड़ी देर में पूरा खेत कट गया। खेत कटने के बाद नानक वहाँ चलने लगे, तो भक्त ने कहा, 'मेरे प्रश्न का उत्तर तो शेष है।' नानक ने कहा, 'तुम्हारे प्रश्न का जवाब तो उन दोनों भाइयों ने दे दिया जो खेत में गेहूँ काट रहे थे। बड़ा भाई आशावादी था, तभी तो कटाई पूरी हुई।' भक्त तो अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया।

धन्य है वह सन्तान जो अपने माता-पिता की शुभ इच्छाओं को पूरा करते हैं।

‘उच्च बोध’

जीवन के सच्चे रक्षक।

इंग्लैंड के एक बादशाह के लिए मशहूर है कि तख्त पर बैठने से पूर्व वह सख्त बीमार हो गए। उनके दरबार में जो सबसे बड़ा सर्जन था, वह चाहता था कि बादशाह का शीघ्र ऑपरेशन किया जाए। महारानी साहिबा ने उसको बताया कि उसके पति ऑपरेशन के लिए सहमत नहीं हैं। यह सर्जन बहुत योग्य था। उसने अनुभव किया कि ऑपरेशन में देर नहीं होनी चाहिए। यदि शीघ्र ऑपरेशन न किया गया, तो बादशाह का जीवन खतरे में है। अपने तौर पर उसने यह अनुभव किया कि ऐसी हालत में उसे पद का त्याग कर देना चाहिए।

महारानी की सेवा में अपना त्यागपत्र प्रस्तुत करके उन्हें बताया कि मैं अपने बोधों से लाचार हूँ। मैं देख रहा हूँ कि जल्द ऑपरेशन के बिना बादशाह का जीवन खतरे में है। इसलिए अच्छा है कि मैं यहाँ से चला जाऊँ, ताकि बादशाह को नुकसान पहुँचने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर न आए। महारानी ने सर्जन के भाव बादशाह तक पहुँचा दिये। वह हिल गए और तुरन्त फरमाया कि मैं ऑपरेशन के लिए तैयार हूँ। मेरा विश्वास है कि जो कुछ सर्जन कह रहा है, वह सत्य है। ऑपरेशन किया गया तथा सर्जन साहिब सफल हुए। बादशाह सलामत ठीक हो गए। उसके बाद उन्होंने 9 वर्ष तक राज्य किया। सर्जन के बोधों और बादशाह के सत्य विश्वास ने उनके मूल्यवान् जीवन की रक्षा की।

परन्तु इसके विपरीत, कुछ माह पूर्व, एक सिविल सर्जन साहिब की मृत्यु हो गई। वह सिविल सर्जन ऐसी बीमारी में फंस गए कि जिसमें उसके साथी सर्जनों ने एकमत होकर यह सलाह दी कि देर न की जाए और उनकी टाँग काटी जाये, नहीं तो जहर फैल जाएगा और सिविल सर्जन की मौत हो जाएगी। अब इस पर सिविल सर्जन साहिब ने अपनी न तो बीमारी को इतना भयानक बोध किया और न ही साथी सर्जनों पर विश्वास किया। और इस मिथ्या में फंसा रहा कि मैं एक हकीम की दवाई ले रहा हूँ, उससे अच्छा हो जाऊँगा। और मुझे ऑपरेशन की जरूरत न होगी। चार-पाँच दिन के बाद उसे पता चला कि ऑपरेशन नितान्त आवश्यक है। सर्जनों को बुलाया गया, उन सबकी यह राय थी कि अब ऑपरेशन में भी मृत्यु निश्चित है, क्योंकि बीमारी अब लाइलाज हो चुकी है। उसे बहुत बड़े हस्पताल में लाया गया था। सब सर्जनों और दोस्तों के सामने ही उसने दो दिन में प्राण त्याग दिए।

मैं हर वस्तु को प्यार करता हूँ जो पुरानी है जैसे पुराने मित्र, पुराना जमाना,
पुराने तरीके, पुरानी पुस्तकें।

प्रिय मित्रो ! उक्त दोनों दृष्टान्तों से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्यात्मा की रक्षा या तो उसके अपने उच्च बोध करते हैं, या उच्च बोध रखने वालों पर सत्य विश्वास रखकर तथा उनके मार्ग-दर्शन में चलने से रक्षा होती है। जहाँ मनुष्य स्वयं उच्च बोधों से विहीन हो तथा मिथ्या विश्वासों से भरा हुआ हो, वहाँ वह बहुत बड़े खतरे में है। करोड़ों मनुष्य यह नहीं जानते कि हम सब गहरे आत्म अन्धकार में बुरी तरह ग्रस्त होने के कारण एक दिन अवश्य 'आत्मिक मृत्यु' का शिकार हो जाएंगे, यदि हम आत्मिक मृत्यु विषयक बोध से शून्य रहे। देवात्मा हमें हमारी इस दारुण अवस्था से बाहर निकाल सकते हैं, यदि हम उन पर विश्वास कर सकें तो।

देवात्मा फरमाते हैं कि उच्च बोध हम सबके सबसे बड़े हितैषी तथा रक्षक होते हैं। यदि कोई जन उच्च बोधों की दृष्टि से खाली हो तथा यदि वह योग्य एवं उच्च बोधधारियों पर सत्य विश्वास करके अपने आपको उनके मार्गदर्शन में चलने का प्रयास करे, तो बहुत बड़ी हानि से रक्षा तथा विकास पा सकता है।

भगवान् देवात्मा 'जीवन विद्या' के मर्मज्ञ हैं। हमारे परम हितैषी एवं परम उपकारी हैं। अद्वितीय देवबोधों के भण्डार हैं। उनके हाथों अपनी जीवन-नौका सौंपकर हम बहुत सुरक्षा एवं विकास पा सकते हैं।

हम सब उच्च बोधधारी बन सकें तथा देवात्मा की शरणागत रहकर सच्ची रक्षा एवं विकास के अधिकारी बन सकें !!

- देवधर्मी

अनमोल वचन

- ◆ यदि आप चाहते हैं कि लोग आप पर विश्वास करें, तो पहले आप उनको यह विश्वास दिलाएं कि आप उन पर विश्वास करते हैं।
- ◆ हज़ारों मील की लम्बी यात्रा केवल एक क़दम से शुरू होती है। अपनी जीवन-यात्रा को शुरू करने के लिए कम से कम एक क़दम तो बढ़ाएं।
- ◆ एक सच्चा मित्र - "मैं यह तो वचन नहीं देता कि तुम्हारी सब समस्याएं हल कर दूंगा, परन्तु समस्याएं आने पर तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगा।"

उद्यमी मनुष्य योग्य न हो, तो भी सिद्धि सफलता प्राप्त कर लेता है।

छोटी बातें बड़े अर्थ

मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य जाति के बिना उसमें मनुष्यता के गुण उन्नत और विकसित नहीं हो सकते। समाज से कटकर वह पशु जीवन ही जी सकता है, बल्कि पशुओं से भी नीचे स्तर का प्राणी बन जाता है। समाज में रहकर ही हम समाज की भाषा, उसके रीति रिवाज, खाने-पीने का ढंग, कपड़े पहनने का सलीका, विज्ञान-दर्शन, धर्म, कला और साहित्य आदि की जानकारी लाभ करते हैं और उसे अपने जीवन का भाग बनाकर जीते हैं। सत्य तो यह है कि मनुष्य का बौद्धिक विकास, नैतिक विकास और आध्यात्मिक विकास वह सम्भव ही नहीं है। हम जो कुछ हैं - वह साथी मनुष्यों की ही देन हैं।

हम सामाजिक सम्बन्धों की ही उपज हैं और अपनी आखिरी साँस तक समाज से सेवाएं पाते रहते हैं। इसलिए समाज के साथ उच्चगतिमूलक मेल की अवस्था को प्राप्त करना ही हमारा लक्ष्य हो सकता है। कहते हैं कि मनुष्य ही एक ऐसा जीव है जो बुढ़ापे तक कुछ न कुछ सीख सकता है और अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। समूह की संस्कृति का हम पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। जहाँ हम बहुत अच्छी बातें भी सीख लेते हैं, वहाँ हमारे स्वभाव में कुछ ऐसी बुराइयाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं जो दूसरों के लिए परेशानी और दुःख का कारण बनती हैं, जिनको आम बोल-चाल में हम आदत भी कहते हैं। थोड़ी मेहनत और ध्यान देने से दूसरों को चुभने वाली नोकों पर काबू पाया जा सकता है। वैसे तो पंजाबी के महान् कवि ने लिखा है कि -

‘वारे शाह मियां आदतां जांदियां नहीं,

भावें कटिये पोरियां पोरियां जी’।

उसने गन्ने की मिसाल दी है। किसान गन्ने को बोने से पहले छोटे-छोटे टुकड़े कर देता है, लेकिन वह टुकड़े फिर गन्ने का रूप ले लेते हैं। इन छोटी-छोटी बुराइयों से हमारी शराफत कम होने लगती है और हम अनघड़ दिखाई देने लगते हैं। उनमें से कुछ बातों पर बहुत विचार करने की आवश्यकता है। जो निम्न हैं -

1. खाने की मेज पर इकट्ठे होना और इकट्ठे होकर ऊँची-ऊँची बातें करते जाना - यह ऐसी आदत है, जिससे न खाने का स्वाद आता है और न बातों का स्वाद आता है।
2. खाना खाते समय किसी गम्भीर बात को छेड़कर बैठ जाते हैं।
3. खाना खाते समय मुँह खोलकर खाना खाते हैं। जिससे मुँह में पड़ा निवाला दूसरों को दिखाई देने लगता है।

पूर्वजों की गरिमा अगली पीढ़ियों के चारों ओर प्रकाश बिखेर देती हैं।

4. ऊँगलियों को खाने में सान लेना और बारी-बारी ऊँगलियों को चाटकर स्वाद लेना।
5. दूसरों से मदद लेकर बदले में धन्यवाद भी न कहना।
6. अपनी कोई गलती नज़र आकर भी जिनके सम्बन्ध में गलती की है, उनसे अफसोस का शब्द भी न कहना।
7. दूसरों के घरों में जाकर मकान के कमरों को देखना।
8. नाखून काटकर न रखना, खासतौर पर पैरों के नाखून गन्दे रखना।
9. बसों या रेलगाड़ियों में ऊँची-ऊँची बातें करना।
10. जब किसी के आराम का समय हो खासकर देर रात को बिना किसी खास कारण के फ़ोन कर देना।
11. बिना फ़ोन किये किसी के घर पहुँच जाना।
12. बिना उचित कारण के किसी के अवगुण चिन्तन करने लगना।
13. बिना कारण के किसी की उम्र पूछना, बिना किसी कारण के किसी का नाम पूछना, बिना किसी खास कारण के किसी का वेतन पूछना।
14. चलती कार या गाड़ी में केलों और संतरों के छिलकों को सड़क पर ही फेंक देना।
15. किसी अजनबी स्त्री या पुरुष को घूर-घूर कर देखना। (नोट - विदेशों में इस आदत को बहुत खराब समझा जाता है। हमारे यहाँ यह आदत बहुत घर कर चुकी है।)
16. किसी से बातचीत करते समय अपनी बड़ाई करने लगना और दूसरों की बात न सुनना।
17. बिना सलाह माँगे सलाह देने लगना।
18. आम तौर पर सभाओं में लेट पहुँचना।
19. सभा समाप्त होने पर सभापति को धन्यवाद करने के बजाय उनके नुकस बताने लग जाना।
20. नम्रता और मिठास से बात न करना बल्कि इसे कमजोरी समझना। अंग्रेजी में कहावत है -

Civility is not a sign of weakness.

1989 में मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ कनाडा गया। यहाँ की केनेडियन एम्बेसी ने हमें एयरपोर्ट तक का वीजा दिया और कहा कि आप अगला वीजा एयरपोर्ट

गुप्त पाप करने वाले व्यक्ति शंकामात्र से प्रकाश में आ जाते हैं।

Immigration office से ले लेना। हम हवाई जहाज से उतरकर वीजा दफ्तर में पहुँचे। वहाँ एक 30-35 साल की स्त्री इस दफ्तर के बाहर खड़ी थी। हमने उनसे पूछा कि हमने वीजा लेना है। उसने हमसे पूछा कि आप कितने दिनों का वीजा चाहते हैं। हमने कहा कि हमें तीन महीने का वीजा चाहिए। उसने हमें कहा कि आप पहली बार आए हैं, आपको छः महीने तक का वीजा मिल सकता है। हमने कहा कि आपकी कृपा होगी, आप छः महीने तक का वीजा लगा दें। इसके बाद उसने कम्प्यूटर पर कुछ पासपोर्ट सम्बन्धी जानकारी ली। मैंने अपनी धर्मपत्नी से कहा कि यह अब हमें **Immigration officer** के पास लेकर जायेगी और वहाँ हमारा वीजा लगवा देगी। लेकिन हमारी हैरानी की कोई हद न रही, जब उसने मोहर उठाई और हमारे पासपोर्ट पर लगा दी और हमें छः महीने का वीजा दे दिया। तब हमें पता चला कि यह तो स्वयं ही **Immigration officer** है। जो एक बहुत महत्वपूर्ण पद होता है। फिर उसने दोनों पासपोर्ट हमें पकड़ाये और अपनी सीट से उठकर खड़ी हुई। हम दोनों के साथ बारी-बारी हाथ मिलाया और कहा कि **Have a nice day** जिसका अर्थ यह है कि यह दिन आपके लिए शुभकर हो। इन विकसित देशों में आप जाइये, आपका ऐसा ही स्वागत होगा। इसलिए नम्रता शराफत की निशानी होती है, कमजोरी की नहीं।

यह घटना हमेशा के लिये मेरे दिलो-दिमाग में नक्श हो गई।

21. दूसरों की अफवाहों, बातों या वादों पर आसानी से विश्वास कर लेना। यह आदत हमारे स्वभाव का भाग बन चुकी है।

1962 में जब चीन ने भारत पर हमला किया और हज़ारों किलोमीटर हमारी सरहदों पर कब्जा कर लिया और वहाँ कब्जा जमाकर आसानी से वापिस चले गये। तब भारतीय फौज़ हमले के लिये बिल्कुल तैयार नहीं थी। भारतवासियों के आत्मविश्वास को गहरा घाव लगा। इसका कारण चीनी नेताओं की मीठी-मीठी बातों और वादों पर जरूरत से कहीं अधिक विश्वास करना था। हम इस मिथ्या विश्वास से भरे हुए थे कि चीन हमारा मित्र देश है। वह कभी भी हमारी सरहदों पर कब्जा नहीं करेगा। उस समय भारत के राष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन् थे। उन्होंने अपनी सरकार की बहुत कड़े शब्दों में भर्त्सना की और बयान दिया कि यह सब कुछ मेरी सरकार की लापरवाही और बहुत आसानी से चीनियों पर विश्वास करने के कारण हुआ।

हमारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बहुत अफसोस और दुःख से

माता-पिता की सेवा करना अथवा उनकी आज्ञापालन करने से बढ़कर
क्या सौभाग्य हो सकता है।

पार्लियामेंट में एक बयान दिया कि हम आधुनिक युग की सच्चाई से कट गये थे और एक बनावटी वातावरण में रह रहे थे, जो हमने खुद अपने इर्द-गिर्द बना रखा था। किसी भी मुल्क की सरकार अपने देशवासियों का अक्स ही ही होता है। अगर पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे प्रधानमंत्री इस कमजोरी का शिकार हो सकते हैं, तो फिर आम लोगों की बात क्या करें। इसलिए आए दिन मुल्क में मिथ्या विश्वास बढ़ते ही जा रहे हैं और रूकने का नाम नहीं लेते।

22. घर से बाहर जाते वक्त अपनी धर्मपत्नी, माता-पिता या रसोईये को बताकर न जाना बल्कि बताने में अपनी हेठी समझना।

मैंने एक माननीय जन को फ़ोन किया। उनकी धर्मपत्नी ने फ़ोन उठाया, मैंने कहा कि अपने धर्मपति जी को फ़ोन देना, मैं उनसे बात करना चाहता हूँ। उन्होंने जवाब दिया कि वह घर पर नहीं हैं। मैंने पूछा कि कहाँ गये हैं और कब वापिस आयेंगे। उसने कहा कि वह कभी बताकर नहीं जाते कि कहाँ जा रहे हैं और कब वापिस आयेंगे।

23. हमारे घरों में जो मुलाजिम काम करते हैं, उनके साथ हमेशा सख्ती से पेश आना। अपने रसोईए के बनाये हुए खाने की कभी सराहना न करना।
24. काम करते समय रासोइये से अगर कोई बर्तन गिर जाये, तो उसकी खूब डाँट-डपट करना।
25. अपने कार ड्राइवर की कभी सराहना और धन्यवाद न करना कि उसने हमें सुरक्षित हमारी मंज़िल तक पहुँचा दिया है।

सोवियत देश के महान् नेता हरोचीफ जब भारत आए थे, तो उन्हें और उनके साथियों को दिल्ली से आगरा ले जाने के लिये खास बोगी लगाई गई थी। आगरा पहुँचने पर जब वह नेता गाड़ी से नीचे उतरे, तो सीधे ड्राइवर के पास पहुँचे, उससे हाथ मिलाया और धन्यवाद दिया।

26. जब अपने से किसी बड़े को मिलने जाना तो जिस मतलब के लिये वह आए होते हैं उसके बजाए लम्बी चौड़ी भूमिका बाँधने लग जाना। जिस मतलब के लिए वह आए होते हैं वह बात पूरी होने पर भी फिर इधर-उधर की बातें शुरू कर देना। और बार-बार घड़ी देखने पर भी यह न समझ पाना कि अब वह मुझे तशरीफ ले जाने का संकेत कर रहे हैं और बातें करनी जारी रखना।

27. किसी के घर मेहमान बनकर जाने पर उनकी कंघी या अन्य सामान बिना पूछे

पुत्र क्रूर स्वभाव का हो जाए तो भी पिता उसके प्रति
निष्ठुर नहीं हो सकता।

इस्तेमाल करना, उनके बैडरूम में जाकर बैठ जाना और कई सूरतों में सर्दियों के दिनों में उनकी रजाई को ओढ़कर लेट जाना और बिना कोई खास कारण के उनके यहाँ टिके रहना। अपने किसी उपकारी या बड़े को पत्र लिखते समय मैले-कुचैले कागज और लिफाफे का प्रयोग करना।

ऐसी और छोटी-छोटी अनेक बातों पर ध्यान देने और याद रखने और इनसे मुक्ति लाभ करने पर हमारा व्यक्तित्व दूसरों के लिए जहाँ सुखकर बन जाता है वहाँ हमारा जीवन भी सुन्दर बनता है।

- 'जीवन पथ' मई, 2014

हमारे जीवन में जब भी कठिनाइयाँ आती हैं, तो हमें कष्ट और दुःख देती हैं। किन्तु जो लोग उनका धैर्यपूर्वक सामना कर लेते हैं, उन्हें वे आत्मबल का ऐसा उत्तम उपहार दे जाती हैं, जो उन कष्टों और दुःखों की तुलना में हज़ारों गुना मूल्यवान् होता है। इसके साथ-साथ अनुभव व आत्मविश्वास का जो वर्धन होता है वो अलग।

अनमोल वचन

- ◆ जितनी वस्तुएं आपके पास हैं, उनका मूल्य समझ कर उनका लाभ लें। जो चीजें प्राप्त नहीं हैं, उनके लिए दुःखी न हो।
- ◆ जिससे आप प्रेम करते हैं, उसको दुःख न दें। दुःख में कुछ ही क्षण लगेंगे लेकिन उसका प्रेम प्राप्त करने में कई वर्ष लग जायेंगे।
- ◆ बीती दुःखदायक बातों को याद करने से दुःख बढ़ता है। उनको याद न करें, बीती अच्छी घटनाओं को याद करके उनसे प्रेरणा लेकर उत्साही बनें।
- ◆ अपनी समस्याओं के बारे में दूसरों से शिकायत न करें। अधिकतर समस्याएं आपने स्वयं उत्पन्न की हैं, आत्म निरीक्षण से उन्हें दूर करें।

अपने ही सुख दुःख के रंग में रंग कर प्रकृति को देखा तो क्या देखा? मनुष्य ही सब कुछ नहीं है। प्रकृति का अपना रूप भी है।

प्रतिज्ञाओं का अर्थ

09 अगस्त, 2001

प्रश्न - चोरी न करने, जुआ न खेलने, एक जीवनसाथी के जीवित रहते दूसरी शादी न करने की प्रतिज्ञाओं को आज के समय के अनुसार कैसे समझ सकते हैं?

उपदेश - आओ, देखें इन मूल प्रतिज्ञाओं के अर्थ के बारे में। पहला प्रश्न यह था कि 'मैं चोरी नहीं करूँगा', क्या इसमें आयकर की चोरी, बिजली-चोरी आदि भी शामिल है। जवाब यह है कि अपनी अन्तरात्मा से पूछो। आयकर या विक्रयकर (sales tax) की चोरी के बहुत से तरीके हैं - कानूनी भी गैरकानूनी भी। यदि सच्चे देशभक्त हो, तो गैरकानूनी तरीके से टैक्स बचा करके अपने देश की जड़ें खोखली नहीं करोगे। बाकी रही बात कानूनी तरीके से ऐसा करने की, तो आयकर विशेषज्ञ (experts) की फौज इसीलिए बैठी है, उसमें कोई नुकसान नहीं। सभी धनी लोग जो इन विशेषज्ञों की सलाह के लिये खर्च कर सकते हैं, वे ऐसा जरूर करते हैं। आयकर की गैरकानूनी तरीके से चोरी करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि सरकार इन्हीं करों पर चलती है। सीधी अँगुली से घी न निकले, तो अँगुली टेढ़ी करनी पड़ती है, इसी तरह सरकार अगर सीधे तरीके से कर वसूल न कर पाये, तो टेढ़े तरीके से वसूल करती है। मनोरंजन कर, उत्पादन कर आदि जैसे कर भी तो अन्त में आम आदमी को ही भरने पड़ते हैं। तो जब यह बात सर्वव्याप्त होने की स्थिति में पहुँच जाये, तो वह भारी तबाही की स्थिति ला देती है। ऐसी ही बात बिजली चोरी की है। भारत में झुग्गी-झोपड़ी वाले लोग एक-बत्ती कनेक्शन से बहुत सारी चीजें चलाते हैं। इस सबका परिणाम यह है कि आए दिन शार्टसर्किट होते हैं और कई-कई दिन तक बिजली गुल रहती है। कई बार आग लगने से पूरी की पूरी बस्ती जल जाती है। तो ऐसी बातें अन्त में लक्ष्य को पराजित करती है (defeat the purpose)। सभी चोरी करने लगेंगे तो और बिजली पैदा करने के लिए पैसे कहाँ से आएंगे? तो ऐसी बातों में अपनी अन्तरात्मा से पूछा करो और अपनी अन्तरात्मा को साफ़ रखा करो। बहुत सारे लोग ऐसा करते हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वो सही हैं या उन्हें सामाजिक स्वीकृति (social sanction) मिली हुई है। कोई पकड़ा जाए ऐसी चोरी में, तो यही लोग आगे बढ़-बढ़ कर मज़ाक उड़ाते हैं। तो अपने हित की बात अपने आगे रखो और छोटी अवधि के लाभ के लिये भविष्य के परिप्रेक्ष्य को मत खोओ।

दूसरा प्रश्न था कि 'मैं जुआ नहीं खेलूँगा' - क्या इसमें स्टॉक मार्केट सट्टा, टी0वी0 गेम-शो, (stock market speculations) आदि भी शामिल हैं? जवाब

किसी भी अच्छे काम को करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा करनी चाहिए।

यह है कि स्टॉक मार्केट सट्टा फिर भी एक पढ़ा-लिखा अनुमान है। (Stock market speculatioin is still an educated guess)। तुम अपने ज्ञान और दिमाग का इस्तेमाल करके पैसे बनाते हो। देखा जाए तो यह ग़लत नहीं है, जब तक कि तुम इसे एकदम जुए की तरह न खेलो कि हर महीने 1000 रुपए के शेयर खरीदूंगा, फिर वह चढ़े या गिरे। जब तक तुम्हारा उसके ऊपर वश है, तब तक ठीक है। गेम शो (Game shows) में भी आपका ज्ञान, तेज़ी या किसी और कला को दूसरों के साथ परखा जाता है और विजेता को पुरस्कार मिलता है आदि। इसमें कोई ख़राबी नहीं है। इन शो (shows) में चाहकर भी तुम रोज़ नहीं जा सकते। लाटरी या जुआ ख़राब तब है जब वह घर को तबाह करने लगे। लाटरी व्यसन में बदल जाती है और ग़रीब लोग इस नशे में अपनी रोज़ की आमदनी डाल देते हैं और फिर उन्हें खाने-पीने के भी लाले रहते हैं। इसलिये हमने यह प्रतिज्ञा शामिल की थी। जैसा हमने कहा, अपने विवेक का प्रयोग करो।

तीसरा प्रश्न था एक पति/पत्नी के जीवित रहते दूसरा विवाह नहीं करेंगे इसका तलाक के सम्बन्ध में क्या तात्पर्य हुआ? या फिर किसी ने पुनर्विवाह किया हो और वह समाज से जुड़ना चाहता हो, तो उसको कैसे हल किया जाए? उत्तर यह है कि जब तलाक हो गया, तो वो कानूनी तौर पर पति/पत्नी नहीं रहते। वे लोग वापस गैरशादीशुदा हो जाते हैं, लड़कियाँ अपना शादी से पहले वाला नाम वापस रख लेती हैं। तलाक के बाद पुनर्विवाह करने में कोई बुराई नहीं। ऐसे ही पुनर्विवाहित इन्सान को समाज में लेने में कोई बुराई नहीं, जबकि उन्होंने कानूनी तौर पर तलाक लेने के बाद विवाह किया हो। इस प्रतिज्ञा का असली स्वरूप है कि एक पति वा पत्नी, जो कि उसके कानूनी तौर पर जीवनसाथी हैं, के जीवित रहते हुए दूसरा विवाह न करना। इसका उदाहरण होगा ऐसे लोग, जो विदेश जाकर दूसरा विवाह कर लेते हैं या बीवी-बच्चों को छोड़कर भाग जाते हैं या ऐसी स्त्रियाँ, जो पति और घरबार छोड़कर किसी दूसरे के साथ भाग जाती हैं। ऐसे में दूसरा विवाह करना वर्जित है।

मुझे आशा है कि अब यह बात थोड़ी समझ में आ गयी होगी। अहम बात वही है कि अपना दिल शीशे की तरह साफ़ रखो, तो अपनी सब प्रतिज्ञाओं का अर्थ साफ़ नज़र आएगा।

सबका शुभ हो!

- परलोक संदेश

हारे एवं गिरे हुए व्यक्ति को हमेशा सांत्वना देनी चाहिए। ताकि उसका मनोबल बड़े और वह दोबारा कोशिश करे।

समझ लीजिए कि आप अच्छा कर रहे हैं।

- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब समझते हैं कि असफलता महज एक घटना है, व्यक्ति नहीं। कल जो था, वह बीत गया और आज जो है, वह एक नया दिन है।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब बीते कल से दोस्ती रखते हैं, वर्तमान को जीते हैं और भविष्य के लिए आशावादी होते हैं।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब आप जानते हैं कि कोई एक जीत आपको बना नहीं सकती और एक हार आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकती।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब विश्वास, आशा और प्यार से परिपूर्ण होते हैं। क्रोध, लालच, अपराधबोध, ईर्ष्या व बदले की भावनाएं किसी भी सूरत में आप पर हावी नहीं होतीं।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब अपनी संतुष्टि के स्तर से आगे निकलना जानते हैं। अधिकारों की जगह अपनी जिम्मेदारियों को भी समझते हैं।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब जानते हैं कि सही का साथ देने में असफल होना, भविष्य में खुद को उसी गलती का शिकार होने की ओर ले जाना है।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब जो है और जैसे है, उसमें सुरक्षित महसूस करते हैं। प्रकृति से आपका तालमेल होता है और आसपास के लोगों के साथ जुड़ाव।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब अपनी चुनौतियों और बाधाओं को भी दोस्त बना लेते हैं।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब यह जानते हैं कि देने का सुख दूसरों से मिलने वाले सुख से कहीं कम नहीं है।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब चिड़चिड़े व्यक्ति के प्रति हंसमुख, कठोर के प्रति विनम्र और जरूरतमंद के प्रति उदार रहते हैं।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब किसी अनचाहे को प्यार कर पाते हैं, निराश को आस देते हैं, बेसहारा के दोस्त बनते हैं और हताश को उत्साह दे पाते हैं।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब अपने बड़े होने से जुड़ी जिम्मेदारियों को भी समझते हैं।
- ◆ आप बेहतर कर रहे होते हैं, जब अपनी स्थितियों को समझते हैं और भूल को स्वीकार लेते हैं।

साभार 'हिन्दुस्तान, 26 जनवरी, 2015'

बोध की आँख ही सर्वश्रेष्ठ आँख है।

आपने कहा था

.....गतांक से आगे

दिनांक : 29.04.1924

इन्होंने 12 विकासार्थी लाने के लिये कहा था। अगर प्रतिज्ञा नामुमकिन न हो (तो वह पूरी होनी चाहिए) नेचर के नियम के साथ अनमेल न हो। **Long Jump** भी न हो। प्रतिज्ञा सिर्फ़ दिखाने के लिये न हो। टूट-फूट कर काम करना चाहिये, वर्ना कैरेक्टर नहीं बनता। फिर जो विकासार्थी आवें, उन पर निगाह रहे।के मुतल्लिक पहले से ही ख़्याल होना चाहिये था कि जिस किस्म की ज़िन्दगी वह गुजर चुके हैं, उनका चलना मुश्किल होगा। वरयाम सिंह जी का कुछ बन सकता है, लेकिन उनमें धन अनुराग ज़्यादा है। स्टाफ को यह मालूम हो कि किसके अन्दर क्या चीज़ है। यह दिल में भाव हो कि मैं इन लोगों की सेवा करने के लिये हूँ। अगर ऐसा भाव हो, तो मालूम हो जायेगा कि उनमें कौन-कौन सी चीज़ है, जो उनको बचाने वाली या मारने वाली है। और जिस तरह माँ बच्चे की सब प्रकार से रक्षा करने के लिये बेबस होती है और उसकी हर बात पर निगाह रखती है। ऐसी अवस्था काम करने वालों की भी होनी चाहिये।

श्रीमान् मेवा सिंह जी हैं। क्या उनके लिये यह होता है कि इनको कर्मचारी बनाने की कोशिश की जाए। उन पर निगाह रहे। जो-जो सेवक श्रद्धालु बनाए जाते हैं, क्या उनकी बुनियाद मजबूत है? यह नहीं है कि उनमें से कोई गिरेगा नहीं। स्कूल में भी सब लड़के पास नहीं होते। **On the whole** बुनियाद मजबूत होनी चाहिये। भगवान् ने दरयाफ़त फ़रमाया कि इन्स्टीट्यूशन में तरक्की होती जाती है या नहीं। किस-किस तरह के सेवक गिरते हैं और उनके गिरने और मरने की फीसदी क्या है?

प्रचारक की ज़िन्दगी ऐसी होनी चाहिए कि वह अपने काम में रत रहे। जैसे कामवासना के दास उसी लोक में वास करते हैं, वैसी ही प्रचारक का **higher** लोक में वास हो।

स्यालकोट के काम के सम्बन्ध में हमारी यह कामना थी कि वहाँ स्त्रियों के लिये कोई मददगार पैदा हो। श्रीमती शोभा देवी जी ज़्यादा होश वाली हैं। राजदेवी जी कुसंस्कार ग्रस्त हैं।

जहाँ काम में कामयाबी हो, वहाँ उस कामयाबी को अपने साथ मन्सूब करना एक बहुत बड़ा खतरा है। यह सामने आये कि यह सब कुछ देव प्रभावों का फल है वर्ना तो मैं जो कुछ हूँ, वही हूँ।

प्रतिज्ञा का पालन ही महानता का लक्षण है।

दिनांक - 30.04.1924

भगवान् ने प्रचार के सम्बन्ध में फ़रमाया कि जो लोग प्रचार का प्रोग्राम बनाते हैं, वह यह शुभकामना करें कि जो कुछ हम करें वह देवसमाज के हित को लेकर करें, अपनी रुचि को लेकर नहीं। जो कुछ त्याग करना पड़े, सब सिर माथे पर। ख़ामखा दिक्कत सिर पर नहीं लेनी चाहिये, लेकिन जहाँ जरूरत पड़े, वहाँ तैयार रहना चाहिये। जिनकी अलग अन्य पार्टियाँ बन सकती हों, वह अलग-अलग पार्टी बनावें। फिर जितने आदमी जावें, उतनी ही निस्बत में काम निकलना चाहिये।

श्रीमान् धर्मबल जी को विकासालय में भेजने के मुत्तल्लिक भगवान् ने फ़रमाया कि जब नेशनल कांग्रेस कायम हुई थी तो मिस्टर ह्यूम (कांग्रेस के स्थापनकर्ता) ने मुझे लिखा था कि चन्द दयानतदार आदमियों की जरूरत है। तब हमने उनको लिखा था कि हमने जो आदमी पैदा किये हैं, वह इस काम के लिए नहीं। वह हमारे मिशन के काम आने के लिये हैं। आप खुद ऐसे आदमी पैदा करें। (इसलिये विकासालय में काम करने के लिये आदमी तुम खुद पैदा करो) इसके अलावा हमें यह भी मालूम नहीं कि विकासालय चलेगा या नहीं, क्योंकि स्टाफ में कोई योग्य आदमी नहीं हैं। श्रीमान् देवत्व सिंह जी एक आदमी थे। उन्होंने बहुत से आदमी पैदा कर लिये। मुश्किल यह है कि यहाँ पर तो एक आदमी भी नहीं है। (भगवान् इतने दुःखी थे कि मेरी बेइख्तियार चीखें निकल गईं। हाय! मेरे भगवान् क्या यूँ ही तड़पते रहेंगे और हम लोग कोई काम न करेंगे। यदि भगवान् दुःखी रहें, तो मेरा जीना किस काम का?)

भगवान् ने फ़रमाया कि क्या यह हो सकता है कि एक लक्ष्य को लेकर चार आदमी मिल सकते हों। अपनी राय या अपनी में - पूरी करने के लिये नहीं, बल्कि उच्च और पवित्र लक्ष्य को लेकर मिलें। रौशनी चाही जावे, तभी काम हो सकता है, वर्ना नहीं। विकासालय का क्या होगा, मुझे मालूम नहीं। मेरी बीमारी के मुत्तल्लिक भगवान् ने फ़रमाया कि इस उम्र में मैंने जब जीवन-व्रत ग्रहण किया, तब एक-एक बार जमीन पर सोना पड़ता था। जो चीज़ें खा नहीं सकता था, वह खाने को मिलती थीं। भगवान् ने एक दफ़ा की घटना का जिकर किया कि ठहरने के लिये एक बन्द रद्दी मकान मिला था।

भगवान् ने बताया कि मेरे सामने यह आता था कि अपनी बीमारी के कारण मैं मुकद्दमे में ही न मर जाऊँ। क्योंकि मैं **Fight** करने वाला आदमी हूँ। मैदान छोड़कर नहीं भागना चाहता।

प्रतिभा जाति पर निर्भर नहीं है। जो परिश्रमी है वही प्राप्त करता है।

प्रचार में इस तरह की विधि ग्रहण करो कि थोड़ा वक्त बयान करो और दूसरों से पूछने का काम करो।

अप्रैल सन् 1924 के आखिरी दिनों में लाहौर में एक दिन भगवान् के हज़ूर में जब स्थगित सेवकों के मुत्तल्लिक बताया गया कि कौन-कौन किस-किस कारण से खारिज हुये हैं, तो भगवान् ने कई पहलुओं में रोशनी दी, यथा -

यह सामने रखने वाली बात है कि जब एक सेवक मरता है, तो प्रायः उसके घर वाले भी उसके साथ जाते हैं। उसके मित्र आदि भी साथ जाते हैं। भगवान् ने की मिसाल दी कि उसके साथ बहुत से जन मारे गये थे।

नेचर में मरने का कोर्स है और उसके अनुसार सेवक मरेंगे, लेकिन संख्या कम से कम होनी चाहिये। किसी सेवक को खारिज करते वक्त उसकी अच्छी तरह तहकीकात हो और फिर रिपोर्ट में यह आवे कि उसकी मदद के लिये क्या कुछ किया गया। सेवक बनाने में जो एहतियात होनी चाहिये, वह बरती जावे। सेवकों के खारिज होने की औसत प्रतिशत निकाली जावे।

स्कूलों के बारे में भगवान् ने फ़रमाया कि सामाजिक स्कूलों में जहाँ तक मुमकिन हो, सेवक-सेविकाओं को उस्ताद और उस्तानियाँ रखा जावे। कुछ वक्त के लिए सहन किया जा सकता है। लेकिन यह जरूरी है कि जहाँ तक मुमकिन हो, हमारे अपने उस्ताद और उस्तानियाँ हमारे स्कूलों में काम करें। (तभी सच्चे अर्थों में देव समाज के स्कूल कालिजों में भगवान् का कारज हो सकता है। गैर देव समाजी जन यदि स्टाफ़ में हों, तो वह स्कूलों में भगवान् का क्या कारज करेंगे?)

- क्रमशः

‘श्रीमान् निर्मल सिंह जी की डायरी’

जैसे किसी व्यक्ति को पानी में डूबने से बचाने के लिए जैसे लाइफ बोट होती है -

ऐसे ही किसी के डूबते मन का सहारा प्यार और अपनेपन से कहे सहानुभूति के दो शब्द हो सकते हैं, जो उसे कठिन समय से बाहर निकालने के लिए काफी होते हैं।

दूसरों के पाप गिनने से पहले अपने पाप गिनो।

देव जीवन की झलक

सत्य अनुराग की अद्वितीय शक्ति

परम पूजनीय देवात्मा श्री देवगुरु भगवान् के आत्मा में जिस सत्य और हित विषयक पूर्णांग अनुराग और असत्य और अहित विषयक पूर्णांग घृणा भाव की अद्वितीय देव शक्तियों का प्रकाश हुआ है, उनके उनकी आयु के साथ-साथ विकसित होने से जहाँ धीरे-धीरे सत्य और शुभ के विषय में उनका ज्ञान और बोध बढ़ता गया और वह इस ज्ञान और बोध के अनुसार उनका साथ देने के लिये मजबूर होते गए, वहाँ उनसे परिचालित होकर उन्हें जो कुछ असत्य और अशुभमूलक मालूम हुआ, उसके कुचलने और सत्य व शुभ का राज लाने हेतु, उनके लिए संग्राम करना भी अनिवार्य हो गया। उन्होंने अपनी उन्हीं देव शक्तियों से परिचालित होकर जहाँ और झूठे विश्वासों के भिन्न ईश्वर या खुदा के बहुत बड़े और महाहानिकारक मिथ्या विश्वास पर सत्य के अति शक्तिशाली गोलों से गोलीबारी की है, और विविध कहलाने वाली ईश्वर-रचित वा इलहामी पुस्तकों के लेखों से ही इस ईश्वर या खुदा का रूप जैसा भयानक और हानिकारक प्रमाणित होता है, उसकी सत्यता पूरे जोर से प्रकट की है, वहाँ जिन जनों ने ईश्वर या खुदा वा उसकी किसी कहलाने वाली इलहामी पुस्तक को आड़ बनाकर झूठ वा कपटता की पालिसी अपनाई, उनकी ऐसी कार्यवाइयों के विरुद्ध भी अपनी जोरदार आवाज़ उठाई है, और मिथ्या के किसी पक्षपाती ने देवात्मा के सत्य अनुराग की अद्वितीय शक्ति के मुकाबले में खड़े होने की कभी हिम्मत नहीं की।

भगवान के इस प्रकार के अद्वितीय युद्ध की कुछ घटनाएं नीचे दी जाती हैं-

1. जब देवात्मा पर उनकी बढ़ती हुई देव ज्योति की एक मंज़िल में ईश्वर वा खुदा के झूठे विश्वास की हकीकत भली-भांति जाहिर हो गई, तब उन्होंने समय आने पर लेख और वाणी दोनों के द्वारा खूब जोर-शोर से इस मिथ्या के विरुद्ध प्रचार शुरू किया और आखिर विविध सम्प्रदायों के सब ईश्वरवादियों को खुली चुनौती दी कि वह परीक्षा की कसौटी पर अपने ईश्वर वा खुदा के विश्वास को सच्चा प्रमाणित करें। यह चुनौती सन् 1912 ई० में अखबार 'जीवन तत्व' के कई परचों में लगातार छपती रही और उसके बाद भी एक वा दूसरी शकल में 'जीवन तत्व' में छपी गई वा उसका हवाला दिया गया। और इसके सिवाए कुछ ट्रेक्टों में भी छपी गई। और फिर यही चुनौती सन् 1918 ई० में आर्यसमाज, कालेज सैक्शन, फिरोज़पुर को दी गई और उर्दू और अंग्रेजी ट्रेक्टों के द्वारा उसकी हज़ारों कापियाँ छापकर सब तरफ प्रसारित की गई। परन्तु आज तक किसी एक ईश्वरवादी ने भी मैदान में आकर

भय और दण्ड से पाप कभी बन्द नहीं होते।

अपने ईश्वर के व्यक्तित्व को इस चुनौती में दी गई परीक्षा की कसौटी पर सिद्ध करने का साहस नहीं किया। जहाँ तक हमें मालूम है सन् 1914 में आर्य अखबार 'अजुन' के ऐडीटर पंडित राजनारायण अरमान ने जो पहले आर्यसमाज से सम्बन्ध रखते थे और बाद में सनातन धर्मी बने थे, और फिर सन् 1918 ई. में आर्य गजट के ऐडीटर लाला खुशहालचन्द ने इस चुनौती को स्वीकार करने की गीदड़ धमकियाँ दीं, परन्तु जब उनके लिए स्थान और समय नियत किया गया, तब उन्होंने जैसी कि उम्मीद की जा सकती थी, परीक्षा की कसौटी पर अपने कल्पित ईश्वर को सिद्ध करने की हिम्मत न की और आएँ-बाएँ-शाएँ करके चुप रह गए।

2. सन् 1879 ई० में अहमदी सम्प्रदाय के बानी मिरजा गुलाम अह साहब ने मसला इलहाम (ईश्वरीय वाणी) की ताईद में भगवान् देवात्मा से पत्र-व्यवहार किया था। और भगवान् ने उसकी तरदीद में उन्हें उत्तर दिए थे। मिरजा साहब के तीन पत्र, 21 मई, 5 जून और 17 जून सन् 1879 के श्री देव गुरू भगवान् की सेवा में मिले थे। और भगवान् ने 3 जून, 12 जून और 19 जून सन् 1879 को उन पत्रों के जुदा-जुदा उत्तर दिए थे। अपने पहले पत्र में भगवान् देवात्मा ने इलहाम के विषय में मिरजा साहब की युक्तियों का खंडन करने के अनन्तर यह लिखा था:-

“इलहाम के इस मिथ्या विश्वास के कारण दुनिया में जितनी हानि पहुँची है, और जिस क़दर बुराइयाँ पैदा हुई हैं, और मनुष्य की उन्नति में जितनी रूकावट हुई है, उसका जिक्र करने को यद्यपि मेरा मन चाहता है, तथापि बहस-तलब अमर से इस समय उसका कुछ ताल्लुक नहीं, इसलिए उसका बयान यहाँ पर छोड़ता हूँ।”

- क्रमशः

प्रायः हमारी सोच और शब्दों की गुणवत्ता किसी दूसरे के जीवन को प्रेरित करती है।

किन्तु कभी-कभी किसी के जीवन से प्रेरित होकर हमारी सोच और शब्दों में भी गुणवत्ता आती है।

कठिन समय, विपत्ति और घोर संग्राम हमें मजबूत बनाते हैं।

मंजिलें और भी हैं

कृत्रिम टाँग से हाफ मैराथन का सफर

उस दिन में बेहद खुश थी, क्योंकि अगले दिन मेरा जन्मदिन था। मैं ट्रेन से फरीदाबाद जा रही थी। पलवल के पास कुछ लड़के मेरे आसपास मंडराने लगे। इससे पहले कि मैं कुछ समझाती, उनमें से एक लड़का मेरा बैग छीनने की कोशिश करने लगा। इसी छीना-झपटी में मैं ट्रेन से नीचे गिर गई और मेरा पैर पटरियों में फंस गया। ट्रेन तो चली गई, लेकिन आसपास मौजूद लोगों ने मुझे रेलवे ट्रैक पर से उठाया, पटरी पर फंसी मेरी टाँग छुड़ाई और तत्काल अस्पताल ले गए। अस्पताल में डॉक्टरों ने बोला कि नर्व क्रैश हो गई है, जिसके चलते मेरी एक टाँग काटनी पड़ी। मुझे लगा कि जन्मदिन पर फिर नया जन्म मिला है। डॉक्टरों ने कहा कि मैं दौड़ नहीं पाऊंगी, मेरी जिन्दगी अब सामान्य नहीं रहेगी। लोग कहने लगे कि अब तो घर पर ही रहना होगा। इस तरह की बातों से मुझे निराशा जरूर हुई, पर उम्मीद ने अभी मेरा दामन नहीं छोड़ा था। मैं जिन्दगी भर किसी की दया की पात्र नहीं बनना चाहती थी। मैंने ठान लिया था कि जो हुआ अब उसे बदला तो नहीं जा सकता, लेकिन अपनी इसी कमजोरी को ताकत बनाकर आने वाले भविष्य को सुनहारा बनाया जा सकता है।

मैंने एमसीए किया है और हैदराबाद में काम करती हूँ। अपने परिवार की बड़ी बेटी होने के नाते परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी मैं समझती थी। कृत्रिम टाँगों पर चलने में सहज होते ही मैं वापस नौकरी करने गई, जहाँ साथियों ने मेरा पूरा सहयोग दिया। हैदराबाद में मैं एक रिहैबलिटेशन सेंटर गई और वहाँ देखा कि लोग दौड़ने के लिए ब्लेड का प्रयोग कर रहे थे। जब मैंने बात की, तो वहाँ के डॉक्टर्स ने मेरा हौसला बढ़ाया और ब्लेड का प्रयोग करने के लिए कहा। ब्लेड लगाने के बाद मैंने देखा कि मैं अब आसानी से भाग सकती थी। मैं धीरे-धीरे दौड़ने की प्रैक्टिस शुरू करने लगी। मैंने धीरे-धीरे दौड़ना शुरू किया, पहले पांच किलोमीटर, फिर 10 किलोमीटर। मुझे लगा कि अगर मैं पांच या 10 किलोमीटर दौड़ सकती हूँ, तो इससे ज्यादा दौड़ने की चुनौती भी स्वीकार कर सकती हूँ।

मैं हमेशा से ही फिटनेस के प्रति काफी सजग थी, ऐरोबिक्स किया करती थी। लेकिन करीब छह माह बाद जब बिस्तर से कृत्रिम टाँगों के साथ उठी, तो गिर पड़ी। मुझे फिर अस्पताल ले जाया गया और वहाँ एक ऑपरेशन हुआ। डॉक्टरों ने दौड़-भाग न करने की सख्त हिदायत दी। मेरे प्रेरणास्रोत दक्षिण अफ्रीकी धावक ऑस्कर पिस्टोरियस थे। लेकिन कृत्रिम टाँग लगने से इन्सान शुरू से एकदम बच्चा

जो किसी की छोटी से छोटी मदद करते हैं वे
बहुत बड़ा काम करते हैं।

बन जाता है। दिमाग को पता नहीं होता कि हमारे पास कृत्रिम टांग है। हमेशा डर रहता है कि हम गिर जाएंगे। एक-एक कदम रखना बिलकुल बच्चों की तरह सिखाया जाता है। वक एकदम नई ज़िन्दगी जीने जैसा हो जाता है। पर अब मैं भूल गई हूँ कि मेरे पास कृत्रिम टांग हैं, क्योंकि अब दिमाग ने इसे अपना लिया है।

मैंने अपने आप को हाफ मैराथन यानी 21 किलोमीटर की दौड़ के लिए तैयार किया। मुझे इससे कोई मतलब नहीं था कि मैं कितने समय में मैराथन खत्म करती हूँ। बस मुझे रेस पूरी करनी थी। हैदराबाद हाफ मैराथन मैंने साढ़े तीन घण्टे में पूरी की, दिल्ली की रेस 2 घण्टे 58 मिनट में, जबकि मुंबई मैराथन 2 घण्टे 44 मिनट में। ब्लेड पहनकर दौड़ना शुरू-शुरू में बहुत मुश्किल था। दौड़ने के लिए एक अलग किस्म का ब्लेड होता है। यह ब्लेड हमें शरीर को आगे की तरफ धकेलने में सहयोग देता है। यह थोड़ा दर्दनाक होता है। मगर बिना दर्द के कुछ मिलता भी नहीं है। अब मुझे ज़िन्दगी जीने का जज़्बा मिल गया है। मैं अपने काम के साथ-साथ समाज के लिए भी कुछ कर रही हूँ।

साभार 'अमर उजाला'

- किरण कनौजिया

भाव प्रकाश

जीवन विज्ञान वर्कशाप

18-19 जून एवं 25-26 जून को 'जीवन विज्ञान' वर्कशाप सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इसमें क्रमशः 24 एवं 26 प्रतिभागियों ने लाभ उठाया। विभिन्न सत्रों का संचालन श्री राजेश रामानी जी एवं सुश्री अनीता जी ने कुशलतापूर्वक किया। भोजन व्यवस्था सेवा, श्रीमती रेणु वाधवा जी, योग कक्षा श्रीमान् पुनीत त्यागी जी, रजिस्ट्रेशन सेवा श्रीमती सीमा शर्मा जी एवं श्री वी. के. अग्रवाल जी ने संभाली। अन्य कार्यों में सेवा देने वाले सदस्यों में श्रीमती श्वेता सहगल, श्री कमल सहगल जी, श्री पंकज शर्मा जी, श्रीमान् हरि ओम् जी, श्रीमान् सुशील जी, श्रीमती इंदू जी, श्रीमती गीता जी, सुश्री अशोका जी ने सेवाओं में अपना-अपना सहयोग दिया।

मिथ्या प्रशंसा बहुत कष्टप्रद होती है।

आपका अनुभव

(वर्कशॉप में पाए लाभों में से अति संक्षिप्त अंश)

जीवन विज्ञान वर्कशॉप में मुझे बहुत कुछ नया सीखने को मिला। वर्कशॉप मुझे बहुत अच्छा लगा, जहाँ मुझे मेरे सवालों के जवाब भी मिले। सबका धन्यवाद, सबका शुभ हो!

- अर्पित सिंघल, पंचकूला

जीवन विज्ञान वर्कशॉप में जीवन उपयोगी शिक्षाएं हमें मालूम पड़ी, जो जीवन-भर हमें काम आती रहेंगी। धन्यवाद!

- कैलाश चन्द्र अग्रवाल, लखनऊ

हमें बदलने के लिए जीवन विज्ञान वर्कशॉप में जो कोशिश की गई है - वह एक सार्थक प्रयास है। धन्यवाद उन कोशिशों के लिए।

- सीमा गुप्ता, रुड़की

वर्कशॉप में मुझे बहुत लाभ हुआ। अब हम अपने भावों को कुछ सकारात्मक बना सकते हैं।

- श्रीमती रेनू सैनी, हरिद्वार

वर्कशॉप में आकर दबे हुए विचार बाहर आने शुरू हो गए कि क्या नहीं किया मैंने जो रह गया अब तक के जीवन में वह करने की समझ मिली।

- विजय कुमारी, अम्बाला

जीवन विज्ञान वर्कशॉप में बहुत अच्छा लगा। अपने को निखारने का गुण सीखा।

- सुनीता रानी, कपूरथला

वर्कशॉप में आकर बहुत लाभ मिला। सत्य शिक्षा का दान हम तक पहुँचाया गया है। ऐसा वातावरण मिला, जिसमें उच्च भाव विकसित हुए हैं।

- सुदेश कुमार गुप्ता, विकासनगर

जीवन को नए तरीके से जानने का मौका मिला। वाकई वर्कशॉप में आकर बहुत अच्छा लगा।

- प्रदीप सिंह, कपूरथला

बैरी भी अद्भुत कार्य करने पर स्तुति के पात्र बन जाते हैं।

मेरे से अनजाने में क्या-क्या हानि हो रही है, मालूम पड़ा। अपने जीवन को बेहतर बनाने का संकल्प मिला। बहुत कुछ नया सीखा और नया पाया।

- श्रेष्ठ अरोड़ा, कपूरथला

यह पूरी वर्कशॉप बहुत ही शानदार नियमबद्ध एवं प्रभावशाली रही। अब महसूस हो रहा है कि जीवन में जो खुशी और आनन्द है वह मिलना कितना आसान है।

- प्रदीप शर्मा, सहारनपुर

इस वर्कशॉप में आकर मेरा बहुत भला हुआ।

- डॉक्टर प्रवेश कुमार गुप्ता, विकासनगर

Good Information giving. New Initiative to create good thinking. Thank you for realising the importance of good behaviour and positive thinking.

- Kartik Sharma, Roorkee

जीवन में अनुशासित कैसे रहना है, यह मैंने इस शिविर में आकर सीखा। यह शिविर जन-जन तक पहुँचे, ऐसी है मेरी शुभकामनाएं।

- कुलवीर सिंह, रुड़की

शिविर को जानकर मालूम पड़ा कि मेरा यहाँ आना मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण फैसला था।

- पंकज शर्मा, मंगलौर

जैसा के इस शिविर का विषय 'जीवन विज्ञान' था, तो पहली बार मैंने अपने जीवन का विज्ञान यानि जीवन जीने की कला के बारे में जाना।

- राघव कुश, सहारनपुर

वर्कशॉप से उच्च कोटि के भाव बढ़ गए हैं। जीवन उच्चतम अवस्था में जाता हुआ महसूस हो रहा है।

- महेन्द्र पाल, रुड़की

प्रसन्न रहने से मनुष्य के अधिकतर दुःख दूर हो जाते हैं।

बहुत ही शान्त वातावरण और अनुशासन व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी। जीवन के हर मोड़ पर काम आने वाली ज्ञान की बातें जानने का मौका मिला। सबका शुभ हो!

- सुरेशो देवी, रुड़की

शिविर में उच्च कोटि की शिक्षा दी गई। इससे आत्मबल एवं मानसिक विकास बढ़ता हुआ अनुभव किया।

- मुकेश कुमार

We can show photos on a digital screen of every previous event organized by devashram.

There should be an alarm song played to wake up others in early morning.

I will surely say that really this shivir was so well arranged. Even there were small but many things to learn & understand. I appreciate the teamwork by devashram.

A big thank you for arranging this workshop.

- Kavya Sehgal (Ages 11), Haridwar BHEL

Session were enlightening. I learnt the importance of knowing oneself, loving and growing techniques which will enhance my personality.

- Aditi Mahajan, Amritsar Punjab

वर्कशॉप मैंने पहली बार अटेंड किया। यह वर्कशॉप इतना सिस्टमैटिक और प्रभावशाली है, मैं बता नहीं सकता। सभी को मैं दिल से धन्यवाद देता हूँ। मेरे जीवन में इसका बहुत प्रभाव पड़ा है। सबका शुभ हो!

- अनमोल नेगी, पदमपुर

मनुष्य का व्यवहार ही उसका असली प्रतिबिम्ब है।

My experience

I love it. Overall, after attending this workshop I am sure that there will be some visible changes in me, and I cleaned a lot.

- Drishti Goswami, Roorkee

यहाँ आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं अपने अन्दर एक बदलाव महसूस कर रहा हूँ।
- आदित्य सिंघल, रुड़की

वर्कशॉप बहुत अच्छी लगी, जीवन के विषय में वैज्ञानिक विधि से हर चीज़ बहुत ही स्पष्ट समझ में आई। शिक्षा को जीवन में उतारना आसान हो गया। धन्यवाद, सबका शुभ हो!
- शशि जी, मोगा

मैंने एक अलग-सी शान्ति महसूस की। जो प्रायः रोज की भागदौड़ में कहीं खो गयी थी।
- महिमा पंचोली, IIT रुड़की

जीवन को सकारात्मक मोड़ देने के लिए अब तक का सबसे प्रभावी सत्र रहा।
- पुनीत त्यागी, रुड़की

द्वार में प्रवेश करने के साथ शुभ की धुन, शुभ हो as greetings जिसका भरपूर आनंद मिला, अन्तर्मन में शुभ हो - की ध्वनि गूंज उठी। पैरों की चप्पल से लेकर, पानी, साबुन, तौलिया, washroom, light, पंखा, आराम करने के लिए बिस्तर, तकिया, चादर, सामान सेफ्टी से सम्भाल कर रखने के लिए लॉकर, वनस्पति दर्शन, मनुष्यजगत् का सहयोग सचमुच में अद्भुत है।

मैं सालों बाद खुद से मिली। यहाँ आने के बाद मैं बिजी शैड्यूल के चलते जिस किरण को भूल गई थी। उसको दोबारा पाया मैंने, उसके लिए धन्यवाद।
- किरण रानी, रुड़की

सबसे बड़ा धन्यवाद Better life training centre का, जो इस तरह की workshop से लोगों को जागरूक कर रहे हैं।

- रितु मल्होत्रा, नीलोखेड़ी

यह जरूरी नहीं कि जैसे दूसरा व्यक्ति हमारे साथ व्यवहार करे तो हम भी उसके साथ वैसा ही करें। इससे उसमें और हममें क्या फर्क।

(श्रीमान् जवाहर लाल जी के सम्बन्ध में)

श्रीमान् जवाहर लाल जी हमारे आदरणीय हैं और गुरु भाई भी हैं। उनकी संगत करते हुए मुझे लगभग 35-40 साल हो चुके हैं। उनका स्वभाव बहुत ही नरम, मौन रहने वाले और व्यायाम करने वाले व दूसरों को भी करवाने वाले थे।

मैंने देखा है कि वह बुढ़ापे में भी अपने शरीर का इतना ध्यान रखते थे, जितना हम नहीं रख पाते हैं। भगवन् की शिक्षा को समझने व जीने में वह स्वयं सफल हुए हैं और उन्होंने लगभग सैकड़ों जनों को भगवान् की शिक्षा द्वारा बदला भी है।

मैं सहायकारी शक्तियों से प्रार्थना करता हूँ कि उनका उच्च से उच्च लोकों में वास हो और भगवन् देवात्मा जी की संगत उन्हें प्राप्त हो। हमें उनके जीवन से कुछ बातें सीखनी चाहियें, जैसे -

1. हमें अपने शरीर का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
2. वह सुबह चार बजे उठकर साधन करते थे। उनको साधन करने में बड़ी रूचि थी। मैंने अपने गुरु भाइयों व मित्रों में इतनी रूचि आज तक नहीं देखी। इस रूचि के लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। यहाँ हमें उनसे यह सीखना है कि वह चार बजे उठकर जो साधन किया करते थे, वह उन्होंने अन्तिम दिनों तक किया।

उनकी यात्राओं का लक्ष्य भगवन् की शिक्षा का प्रचार करना था। श्रीमान् बलदेव सिंह जी और श्रीमान् जवाहर लाल जी - इन दोनों का एक ही लक्ष्य था। इन्होंने प्रण लिया था कि जब तक हमारा जीवन रहेगा, हम भगवान् देवात्मा जी की शिक्षा का प्रचार करते रहेंगे और उन दोनों ने अपने जीवन में समर्पण भी बहुत किया है। मैं उन दोनों को धन्यवाद देता हूँ और नमस्कार करता हूँ।

- डॉ. मुंशा सिंह जी ग्रोवर (पदमपुर, राजस्थान)

श्रीमान् जी का परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! उनको उच्च स्थान मिले, ऐसी शुभकामना करता हूँ। 60 वर्ष से अधिक श्रीमान् जी ने परसेवा की है। उनकी प्रेरणाएँ हमारे लिए वरदान साबित हो। उनका शुभ हो!

- श्री सुभाष चन्द सेतिया (पदमपुर)

हमारे अन्दर बदले की भावना नहीं होनी चाहिए। बदला इन्सान को डूबाता है किन्तु प्यार मिलाता है।

मैं आप सभी के समक्ष बाबा जी के बारे में दो शब्द बताना चाहूँगी। मुझे तो यह याद भी नहीं है कि मैं बाबा जी को कब से जानती हूँ। मैंने जब से होश संभाला है, तब से वह हमारे घर आते रहे हैं। मुझे याद है वह जब भी मुझसे मिलते थे तो मुझे हमेशा बताते थे कि एक बार वह हमारे सोनीपत वाले घर में आये और मैं पर्दे के पीछे छिप गई थी, तब मैं केवल दो वर्ष की थी।

मैंने उन्हें एक भजन गाकर सुनाया - 'जब-जब यह मन घबराए, कोई राह नजर न आए, तुम गुरु प्रार्थना करो'। फिर ऐसे ही वो हमारे घर आते रहते थे और जब भी मिलते थे, यही किस्सा दोहराते थे, जिसे सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगता था। बाबा जी परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! वह शरीर से तो हमारे साथ नहीं रहे, परन्तु वह हमारे दिलों में सदैव जीवित रहेंगे। सबका शुभ हो!

- कु० गुरनूर अरोड़ा, रुड़की (एक बालिका)

विशेष श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान् जवाहर लाल जी के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करता हूँ। श्रीमान् जी अपने नाम के अनुसार मिशन के चमकते हुए जवाहर लाल जी थे!

श्रीमान् जी ने अपनी भरी जवानी में गुरु मिशन का काम आरम्भ कर दिया था। शायद तब मैं कक्षा में पढ़ता था, जब श्रीमान् जी श्रीमान् भगत सिंह जी के साथ हमारे यहाँ योल कैण्ट में आया करते थे। वह हमारे साथ बैडमिन्टन भी खेला करते थे। हमारे परिवार के साथ उनका सम्बन्ध बहुत मीठा और घरेलू था।

श्रीमान् जी गुणों की खान थे। वह बहुत मेहनती, कर्मठ, ईमानदार, परोपकारी, समय के पाबन्द, पवित्र, मितव्ययी तथा परहेजमगार थे। वह गुरु की शिक्षा के प्रचार और प्रसार के प्रति पूर्ण समर्पित थे। वह जहाँ जाते, उन्हें अपना बना लेते थे। बच्चों के लिए उनके दिल में बड़ा प्यार व स्नेह था। वह बहुत सादा और स्वच्छता प्रिय थे। उन्होंने जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखे, पर गुरु से कभी मुँह नहीं मोड़ा।

उनका यह कथन उनके व्यक्तित्व को और भी निखारता है। जब वे कहते, "न असीं थकिए ते न असीं अकिए" अर्थात् गुरु मिशन का काम करते हुए न तो हम थकते हैं और न ही तंग पड़ते हैं।

वह अपने प्रचार दौरों का कार्यक्रम बहुत पहले बना लेते थे और पूरा वर्ष उनके अनुसार चलते थे। वह नियमित रूप से निज का साधन तथा योगा क्रिया करते

व्यक्ति की सोच ही उसे गुलत और अच्छा कराती है।

थे। यह मेरा सौभाग्य रहा कि कितने ही उनके रचित भजनों को तथा परलोकवासी धर्म सम्बन्धियों के बहुत संक्षिप्त जीवन चरित्रों को उनके कहने पर मैंने अपनी हैंड राइटिंग में दोबारा लिखा।

वह मिशन के एक बहुत मजबूत स्तम्भ थे। उनके परलोक गमन से समाज को बहुत घाटा हुआ है। काश, यह घाटा गुरु कृपा से शीघ्र पूरा हो सके! मैं और मेरा परिवार परलोक में उनके सब प्रकार के मंगल की कामना करते हैं। उनका शुभ हो!

उनके द्वारा उपकृत

वीरेन्द्र डोगरा (योल कैण्ट, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश)

Sorry to learn of Pralok gaman of Respected Shriman ji. Kindly convey our deep condolences to Bahin ji and the rest of the family. We fondly remember the good days of our close association in good old days. Best wishes for the departed soul.

- Dr. Vinod Khara, Chandigarh

पतंजलि विश्वविद्यालय में उद्बोधन

30 जून, 2022 को हरिद्वार में स्थित पतंजलि विश्वविद्यालय के प्रांगण में 'Expectations from a Teacher' विषय पर प्रो. नवनीत अरोड़ा जी ने एक प्रभावशाली प्रेरणास्पद उद्बोधन दिया। प्रायः 70 प्राध्यापकों, शोध के छात्रों व कुछ अन्य पदाधिकारियों ने प्रायः 1:30 घण्टे तक चले इस उद्बोधन को दत्तचित्त होकर सुना। व्याख्यान के दौरान बीसियों बार क्राम्फ्रेस हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजता रहा। इस अवसर पर श्री राजेश रामानी जी व भोपाल से आए हुए 'तेज ज्ञान' के साधक श्री अशोक शुक्ला जी भी साथ में उपस्थित रहे। 'आस्था चैनल' के प्रतिनिधि के द्वारा इस सत्र की रिकॉर्डिंग भी की गई। सबका शुभ हो!

किसी भी प्रकार का निर्णय जल्दबाजी में नहीं लेना चाहिए।

ग्रीष्मकालीन आत्मबल विकास शिविर, रुड़की

(06 से 12 जून, 2022)

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के सूक्ष्म संरक्षण में सिविल लाइन्स, रुड़की स्थित देवाश्रम में 06 से 12 जून, 2022 तक आत्मबल विकास शिविर का आयोजन अति सफल व हितकर प्रमाणित हुआ। शिविर में हुए साधनों व उनसे उत्पन्न हुए प्रभावों का वर्णन करना तो एक बहुत ही कठिन कार्य है, हाँ शिविर की कुछ मुख्य गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं -

तैयारियाँ - मार्च शिविर के बाद से ही इस शिविर की तैयारियाँ शुरू कर दी गई थीं। शिविर से पहले "जीवन विज्ञान" वर्कशॉप के तीन सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों में धर्मसम्बन्धियों के अतिरिक्त नए जनों ने विशेष रूप से बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। इसके लिए पूरे देवाश्रम परिसर की साफ-सफाई की गई। बिस्तरों व अन्य सामानों को झाड़-पोंछकर व्यवस्थित रूप से यथा स्थान सैट किया गया। रसोई घर व बर्तनों की सफाई की गई व भोजन व्यवस्था हेतु किराना वा अन्य आवश्यक सामान मंगाया गया। इस काम में श्रीमती पूनम जैन, श्री आर0 एन0 बत्रा, श्री रामराज जी की पूरी टीम ने अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया।

आगमन - इस शिविर हेतु देश के दूर व नज़दीक के स्थानों से प्रायः 50 जन पधारे व 50 के लगभग स्थानीय जन भी शिविर में भागीदार बनते रहे। कुल 100 के लगभग जनों ने इस आत्मबलवर्धक वातावरण से लाभ उठाया।

विभिन्न प्रदेशों से पधारे धर्म साथियों की संख्या इस प्रकार है - हरियाणा 11, हिमाचल प्रदेश 02, मध्य प्रदेश 02, पंजाब 10, राजस्थान 07, उत्तर प्रदेश 22, उत्तराखण्ड 50 जगहों से श्रद्धालुओं ने शिविर का लाभ लिया।

मुख्यसाधन - शिविर की गतिविधियाँ 06 जून की प्रातः से शुरू हो गई थीं। शिविर से पाए लाभों का वर्णन करना तो एक कठिन कार्य है, हाँ साधनों के विषय व उनके माध्यम बने जनों के नाम इस प्रकार रहे -

पश्चाताप से ही पापों की शुद्धि होती है।

दिनांक	विषय	सभापति	दिनांक	विषय	सभापति
06.06.22 प्रातः 09 बजे	गरीबी कब तक?	श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी	06.06.22 सायं 05:30	सौभाग्य के सफल होने के नियम	श्रीमान् यशपाल सिंघल जी
07.06.22 प्रातः 09 बजे	जीवन का तराजू	श्रीमान् प्रेम रोचलानी जी	07.06.22 सायं 05:30	अदृश्य शत्रु या मित्र?	श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी
08.06.22 प्रातः 09 बजे	पाया बहुत है	सुश्री अनीता जी	08.06.22 सायं 05:30	मेरा अभिमान मेरा वतन	वर्कशाप श्री राजेश रामानी जी
09.06.22 प्रातः 09 बजे	सच्चा साथी कौन?	श्रीमान् प्रेम रोचलानी जी	09.06.22 सायं 05:30	रे धन!	श्रीमान् डॉ. नवनीत अरोड़ा जी
10.06.22 प्रातः 09 बजे	कुछ करो भी!	श्रीमान् यशपाल सिंघल जी	10.06.22 सायं 05:30	तैयारी कब करोगे?	वर्कशाप संचालक श्री राजेश रामानी मुख्यवक्ता डॉ. नवनीत अरोड़ा जी
11.06.22 प्रातः 09 बजे	धुल गई मैल?	श्री बी.के. अग्रवाल जी	11.06.22 सायं 05:30	ऐसे थी श्रीमान् जी!	वर्कशाप श्रीमान् डॉ. नवनीत अरोड़ा जी
12.06.22 प्रातः 09 बजे	देव जीवन की समझ	श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी	-	-	

अन्य गतिविधियाँ - उपरोक्त मुख्य साधनों के भिन्न शिविर की अन्य गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं -

- प्रातः कालीन निज का साधन व योगासन तथा प्राणायाम कार्यक्रम प्रतिदिन नियमित रूप से चलते रहे।
- विश्वास चिकित्सा व हीलिंग सेवा में श्रीमान् कंवरपाल सिंह जी व वाराणसी से पधारे श्री दिनेश उपाध्याय जी विशेष रूप से सहायक प्रमाणित हुए।
- रात्रि कालीन सत्र में भजनों का गान धर्मसम्बन्धी मिलजुल कर करते रहे। इसमें श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी व श्रीमान् सोत्तम जी विशेष रूप से सहायक रहे।
- भोजन व्यवस्था श्रीमती पूनम जैन, श्रीमती शारदा बत्रा, श्रीमती रेनू सिंघल व अन्य अनेक धर्म सम्बन्धियों ने श्री रामराज जी की टीम के साथ मिलजुलकर बखूबी निभाई। सामान लाने का काम श्री आर.एन. बत्रा, श्री अंकुर जैन व श्री बी.के. गुप्ता जी ने सहर्ष

प्रार्थना या भजन जीभ से नहीं हृदय से होते हैं।

स्वीकार किया।

- साधनों के विषय, दीप प्रज्वलन, पुष्पसज्जा व अनेक व्यवस्थागत कामों को सुश्री अनीता जी ने बड़ी लगन व समय से निभाया।

- माइक सिस्टम, मंच संचालन तथा वर्कशाप प्रस्तुतिकरण में श्री राजेश रामानी जी व हरिओम् जी बड़ी मुस्तैदी से लगे रहे।

- बिजली व्यवस्था, सैनिटेशन व अन्य बहुत से कार्य श्री बी.के. गुप्ता जी बड़ी तन्मयता से करते व कराते रहे।

- ऑफिस का कार्य श्री संजय धीमान् जी अतिरिक्त समय देकर भी दक्षता व नम्रता पूर्वक करते रहे।

समापन - दिनांक 12.06.22 को प्रातःकालीन सत्र के बाद देवारती और जयध्वनि के बाद इस अतिहितकर शिविर का समापन हुआ। शिविर का सारा खर्च शिविरार्थियों द्वारा दिए गए दान से पूरा हुआ। सबका शुभ हो!

शोक समाचार

शोक का विषय है कि हमारे सहयोगी श्री आदेश अग्रवाल जी (रुड़की) के माननीय पिता श्री विजय कुमार जी का 18 जून, 2022 को प्रायः 72 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। 27 जून, 2022 को पैसिफिक बैंकवट हॉल, रुड़की में इनके निमित्त आयोजित श्रद्धांजलि सभा में प्रो. नवनीत अरोड़ा जी ने परलोक के विषय में सारगर्भित उद्बोधन दिया और शुभकामना करवायी। परलोक में उनका हर प्रकार से शुभ हो!

शोक का विषय है कि हमारी साथी सेविका श्रीमती पूनम जैन जी (रुड़की) की माननीया माता जी श्रीमती सरला देवी जी (दिल्ली) का 07 जुलाई, 2022 को प्रायः 96 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

(नोट - आगामी 'जीवन विज्ञान' वर्कशॉप 13-14 अगस्त, 2022 को रुड़की में होगी। सम्पर्क सूत्र - 81260 - 40312)

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311),
सहारनपुर (98976-22120), गुवाहटी (94351-06136), गाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला
(98145-02583), चण्डीगढ़ (0172-2646464), पदमपुर (09309-303537), अम्बाला (94679-48965),
मुम्बई (9870705771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (80542-66464)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कृश ऑफसेट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी,
जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूनपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ० नवनीत अरोड़ा, डी - 05, हिल व्यू अपार्टमेंट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242